MP Board Class 9th Hindi Navneet Solutions पद्य Chapter 5 प्रकृति-चित्रण

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
चन्द्रमा की किरणें कहाँ-कहाँ फैली हुई हैं?
उत्तर:
चन्द्रमा की किरणें जल और थल में तथा पृथ्वी से लेकर अम्बर तक फैली हुई हैं।

प्रश्न 2. धरती अपनी प्रसन्नता किस प्रकार प्रकट कर रही है?
उत्तर:
धरती अपनी प्रसन्नता हरी घास के झोंकों में तथा मन्द पवन से फूलने वाली तरुओं के द्वारा प्रकट कर रही है।

प्रश्न 3.
पैसा बोने के पीछे कवि का क्या स्वार्थ था?
उत्तर:
पैसा बोने के पीछे कवि का यह स्वार्थ था कि उससे सुन्दर-सुन्दर पेड़ उगेंगे और फिर वे पेड़ बड़े होकर कलदार रुपयों की फसल उगायेंगे जिन्हें बेचकर कवि एक बड़ा सेठ बन जाएगा।

प्रश्न 4.
कवि ने धरती में क्या बोया?
उत्तर:
कवि ने धरती में सेम के बीज बोये।

प्रश्न 5.
कवि एक दिन अचरज में क्यों भर उठे?
उत्तर:
कवि ने देखा कि एक दिन उनके घर के आँगन में जहाँ कवि ने सेम के बीज बोये थे उनमें से छोटे-छोटे पौधे उग आये हैं। इन्हें देखकर उसे बड़ा अचरज हुआ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
कवि ने ओस की बूंदों को लेकर क्या कल्पना की है? 'पंचवटी' कविता के आधार पर बताइए।
उत्तर:
कवि ने ओस की बूंदों को लेकर यह कल्पना की है कि जब सारे संसार के प्राणी रात में सो जाते हैं तब इस पृथ्वी पर चन्द्रमा ओस रूपी मोतियों को बिखेर देता है। प्रात:काल होने पर सूर्य अपनी किरणों रूपी झाड़ू से उन सभी मोतियों को बटोर लेता है।

प्रश्न 2.
प्रकृति को नटी क्यों कहा गया है?
उत्तर:
कवि ने प्रकृति को नटी इसलिए कहा गया है कि जिस प्रकार नटी अर्थात् नर्तकी अपने हाव-भाव एवं आंगिक चेष्टाओं द्वारा अपने भावों को व्यक्त करती रहती है। उसी प्रकार प्रकृति भी अपने क्रियाकलापों द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त कर देती है।

प्रश्न 3.
गोदावरी नदी के तट का मोहक वर्णन कीजिए।
उत्तर:
कवि कहता है कि गोदावरी नदी का यह तट अब भी ताल दे रहा है और उसका चंचल जल कल-कल की ध्वनि में अपनी तान छेड़ रहा है।

प्रश्न 4.
कवि ने किरणों के सौन्दर्य वर्णन में कौन-सी युक्ति अपनाई है?
उत्तर:
कवि ने किरणों के सौन्दर्य वर्णन में यह युक्ति अपनाई है कि जैसे प्रकृति सरल और तरल ओस की बूंदों के द्वारा वह हर्षित होती है तथा विषम समय आने पर वह भी मानव के समान ही रोती है।

प्रश्न 5.
'सुन्दर लगते थे मानव के हँसमुख मन से'-इस पंक्ति से कवि का क्या अभिप्राय है?
उत्तर:
सेम की श्यामवर्णी बेलों पर सफेद पुष्पों के गुच्छे मनुष्य की उन्मुक्त हँसी के समान लग रहे थे। कवि ने सफेद पुष्पों की तुलना मनुष्य के हँसते हुए मुख से की है।

प्रश्न 6.
कवि की धरती माता के प्रति क्या धारणा बनी?
उत्तर:
कवि धरती माता को उपकार करने वाली, सबका हित करने वाली और बिना किसी लोभ के उनका पालन-पोषण करने वाली मानता है। साथ ही कवि की मान्यता है कि जो व्यक्ति प्रकृति के साथ जितना श्रम करता है धरती माता उसे उतना ही अच्छा फल देती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
पंचवटी में प्रकृति के उपादानों की शोभा का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
पंचवटी में कवि ने प्रकृति के उपादानों के रूप में सूर्य, चन्द्र, हरी घास, तरु, गोदावरी नदी की कल-कल करती हुई जल की तरंगों आदि को प्रस्तुत किया है। रात में चन्द्रमा अपनी शीतल ओस की बूंदों से पृथ्वी को आनन्दित करता है तो प्रात:काल सूर्य उन्हीं बूंदों को साफ कर देता है। पंचवटी में हरी-हरी घास उगी हुई है। घास की कोमल नोंकें पृथ्वी के रोमांच को व्यक्त कर रही हैं। संध्या का समय जगत् के सभी प्राणियों को विश्राम देने वाला बताया है। गोदावरी के जल की कल-कल करती हुई तरंगें मानव मन की खुशी को व्यक्त करने वाली हैं।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 2.
निम्नलिखित काव्यांश की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए
(अ) है बिखेर देती ..... सवेरा होने पर।
उत्तर:
कविवर गुप्त जी रात्रिकालीन सुषमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस समय पृथ्वी सबके सो जाने पर ओस के रूप में अपने मोती बिखेर देती है और प्रात:काल होने पर सूर्य उन्हीं ओस रूपी मोतियों को बटोर लेता है। कहने का भाव यह है कि रात के समय जो ओस घास पर मोती के रूप में चमकती है प्रात:काल सूर्य की गर्मी से वह पिघल जाती है। इस प्रकार विश्राम प्रदान कराने वाली उस अपनी सन्ध्या को वह सूर्य आकाश रूपी श्याम शरीर प्रदान कर उसके रूप को नये रूप में झलका देता है।

(आ) पर बंजर ..... पैसा उगला।
उत्तर:
कवि कहता है कि जब मैंने बचपन में लोगों से छिपाकर पैसे जमीन में बोये तो उस बंजर भूमि में से पैसों का एक भी कुल्ला नहीं फूटा। उस बाँझ पृथ्वी ने मेरे द्वारा गाड़े गये पैसों में से एक भी पैसा नहीं उपजाया। इस बात को जानकर मेरे सपने जाने कहाँ मिट गये और वे धूल में मिल गये। मैं निराश हो उठा फिर भी बहुत दिनों तक प्रतीक्षा करता रहा कि शायद कभी उनमें कुल्ले फूटें। मैं बालक बुद्धि के अनुसार टकटकी लगाकर पाँवड़े बिछाकर उन रुपयों के उगने की प्रतीक्षा करता रहा। मैं अज्ञानी था, इसी कारण मैंने भूमि में गलत बीज बोये थे। मैंने स्वार्थ की भावना से भूमि में पैसों को बोया था और उन्हें इच्छाओं के तृष्णा रूपी जल से सींचा था।

प्रश्न 3.
मानवता की सुनहली फसल उगाने से कवि का क्या आशय है?
उत्तर:
मानवता की सुनहली फसल उगाने से कवि का यह आशय है कि हमें पृथ्वी पर उत्तम विचारों वाले बीज बोने चाहिए साथ ही हमें उसमें अथक परिश्रम भी करना चाहिए। ऐसा होने | पर उसमें से जो फल निकलेगा उससे समूची मानवता खुश एवं प्रसन्न रहेगी। कहीं पर दुःख-दर्द, अभाव-निराशा एवं बुरे विचार देखने को नहीं मिलेंगे। कहने का भाव यह है कि यदि मनुष्य निस्वार्थ भाव से प्रेम एवं परिश्रम समाज में बाँटता है तो उससे सम्पूर्ण मानवता सुख का अनुभव करेगी।

प्रश्न 4.
“हम जैसा बोयेंगे वैसा ही पायेंगे” कविता के आधार पर कवि का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
इस कविता में कवि का आशय यह है कि यदि हम अच्छा बीज बोयेंगे तो हमें अच्छे फल मिलेंगे और यदि हम किसी स्वार्थवश बुरे बीज बोयेंगे तो उनका परिणाम भी बुरा मिलेगा। इस कविता में कवि ने जीवन में दो प्रयोग किये। प्रथम प्रयोग उसने बालपन की अज्ञानता में पृथ्वी में पैसे बो कर दिया था जिसमें उसे निराशा मिली, दूसरा प्रयोग उसने सेम के बीज बो कर किया था जिसमें उसे सब ओर खुशी और आनन्द मिला। सेम की बेल पर इतनी फलियाँ उगी कि कवि ने जाने-पहचाने, परिवारी तथा अन्य सभी लोगों को भरपेट खिलाया।

कहने का भाव यह है कि दोष पृथ्वी का नहीं होता है, दोष तो हमारी अपनी भावना का होता है। यदि हमारी भावना शुद्ध, पवित्र एवं परोपकारी है तो उससे जहाँ हमें आनन्द और शान्ति मिलेगी वहीं हम समाज तथा देश का भी भला कर सकेंगे।

काव्य-सौन्दर्य

प्रश्न 1.
निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचान कर लिखिए

1. मानो झूम रहे हैं तरु भी मंद पवन के झोंकों से।
2. चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में।
3. निर्झर के निर्मल जल में, ये गजरे हिला-हिला धोना।

उत्तर:

1. उत्प्रेक्षा अलंकार
2. अनुप्रास अलंकार
3. पुनरुक्तिप्रकाश तथा मानवीकरण अलंकार।

प्रश्न 2.
निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिएसवेरा, शुचि, बूढ़ा, हर्ष।
उत्तर:

शब्द	विलोम
सवेरा	शाम
शुचि	अशुचि
बूढ़ा	जवान
हर्ष	शोक, दु:ख।

प्रश्न 3.
निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए
आँख, रवि, धरती, रजनी, फूल।
उत्तर:
आँख – चक्षु, नेत्र।
रवि – दिनकर, सूर्य।
धरती – पृथ्वी, वसुधा।
रजनी – निशा, रात्रि।
फूल – पुष्प, सुमन।

प्रश्न 4.
निम्नलिखित पंक्तियों का भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए
(क) रवि बटोर लेता है, उनको, सदा सबेरा होने पर।
(ख) अति आत्मीया प्रकृति हमारे साथ उन्हीं से रोती है।
उत्तर:
(क) इन पंक्तियों में कवि ने प्रकृति के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहा है कि रात में चन्द्रमा द्वारा टपकाई गई ओस की बूंदों को प्रात:काल होने पर सूर्य उन्हें बटोर लेता है।

(ख) इन पंक्तियों में कवि ने यह दिखाया है कि प्रकृति मानव के सुख में तुहिन कणों को बिखरा कर हँसती है तो वही प्रकृति दु:ख के समय आत्मीय भाव से अपने उपादानों द्वारा दुःख भाव को भी व्यक्त करती रहती है।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 5.
पाठ में संकलित अंशों से प्रकृति के मानवीकरण के उदाहरण छाँटकर लिखिए।
उत्तर:

1. पुलक प्रकट करती है धरती हरित तृणों के झोंकों से।

2. है बिखेर देती वसुंधरा, मोती सबके सोने घर।
   रवि बटोर लेता है उनको, सदा सवेरा होने पर।
3. और विरामदायिनी अपनी संध्या को दे जाता है।
4. अति आत्मीय प्रकृति हमारे साथ उन्हीं से रोती है।
5. रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ।